अवतार जगत माता गुरूबचन के प्यारो को
हम याद करे संतो सतगुरू के दुलारो को

वो दूर नही हमसे नजदीक हमारे है
उनके शुभ कर्मो ने इतिहास सवारे है
हम जान सके उनके हर एक ईशारो को

मजहब की ना परवा की ना डर था जमाने का
गुरूमत पर चलना ही था काम दिवानो का
करते ही रहे वो बुलंद इन सच्च की पुकारो को

इस प्यार के बूटे को बूटाने लगाया था
अवतार जगत मां ने इसे दिल से उगाया था
इक गुल जो बना गुलशन है शुकर बहारो को

इक प्यार की भाषा ही हर संत सिखाता है
गुलशन में बहारो को सतगुरू ले आता है
अब शेर अमर भरलो गुरूमत के प्यारो को

तर्ज ः सतसंग वो गंगा है.....